Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra

Lecture Notes on - **ग्लोरियस (रक्तहीन) क्रांति के महत्व और परिणाम।** *(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)*

ग्लोरियस (रक्तहीन) क्रांति के महत्व और परिणाम।

1688 ई. में इंग्लैण्ड में शासकों का परिवर्तन बिना रक्त की बूंद बहाए संपन्न हो गया, इसलिए इस घटना को वैभवपूर्ण महान शानदार क्रांति कहते हैं। इस रक्तहीन राज्य क्रांति का महत्व उसके गर्जन-तर्जन में नहीं, अपितु उसके उद्देश्यों की विवेकशीलता और उपलब्धियों की दूरगामिता में है। यह एक युग निर्माणकारी घटना है। इससे इंग्लैण्ड में लोकप्रिय सरकार का युग प्रारंभ हुआ और सत्ता निरंकुश स्वेच्छाचारी राजाओं के हाथ से निकल कर संसद के हाथों में आ गयी। इसके परिणाम अधोलिखित हुए- 1 इस क्रांति से स्टुअर्ट राजाओं और संसद के बीच दीर्घकाल से चले आ रहे संघर्ष का अंत हो गया। इस संघर्ष में संसद की विजय हुई। अब इंग्लैण्ड में वास्तविक शासक संसद बन गयी। 2 सम्प्रभुता संसद में निहित - क्रांति के समय संसद ने "बिल ऑफ राइट्स" पारित कर उस पर विलियम और मेरी की स्वीकृति ले ली। इससे संसद की सम्प्रभुता स्वीकाकर ली गयी और राजा की सर्वोच्च

राजसत्ता समाप्त कर दी गई। जनता की सत्ता सर्वोपरि मान ली गयी। राजा सिद्धांत मे प्रभुता सम्पन्न रहा पर व्यवहार में संसद सर्वोपरि हो गयी। **3** दैवी सिद्धांतों अमान्य और संसद के व्यापक अधिकार - इस क्रांति ने राजा के दैवी अधिकारों को अमान्य कर दिया। संसद द्वारा पारित किसी कानून को निरस्त करने का राजा का अधिकार समाप्त हो गया। राजा, संसद की स्वीकृति के बिना कोई कर नहीं लगा सकता। इस क्रांति ने यह स्पष्ट कर दिया कि नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा करना, कानून बनाना और कर लगाना संसद के अधिकारों के अंतर्गत है। राजा संसद के अधिकारों में किसी भी प्रकार से हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। **4** संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना - क्रांति से पूर्व राजा सर्वोपरि था, पर इसके बाद राजा संसद के अधिनियम के अंतर्गत एक सामान्य व्यक्ति रह गया। अब राजा की स्वेच्छाचारिता समाप्त हो गयी। उसके अधिकार संसद द्वारा प्रतिबंधित नियंत्रित और सीमित कर दिए गए। अब इंग्लैण्ड में वैधानिक राजतंत्र का युग प्रारंभ हुआ और संसदीय प्रणाली का शासन प्रारंभ हुआ। **5** सेना पर संसद का अधिकार - अब तक सेना और उसके

अधिकार राजा के अधीन थे। अब संसद ने विद्रोह अधिनियम पारित कर सेना पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया। इससे राजा की सैन्य शक्ति समाप्त हो गयी और सेना में व्याप्त अव्यवस्था भी दूर हो गयी। 6 केथोलिक खतरे का अंत और इंग्लैण्ड का धर्म एंग्लिकन - बिल ऑफ राइट्स में यह तथ्य स्पष्ट कर दिया गया कि कोई केथोलिक राजा या वह व्यक्ति जिसका विवाह केथोलिक से हुआ हो इंग्लैण्ड के राज सिंहासन पर आसीन नहीं हो सकेगा। इस प्रकार इंग्लैण्ड सदा के लिए केथोलिक खतरे से मुक्त हो गया। धार्मिक क्षेत्र में भी यह स्पष्ट कर दिया गया कि एंग्लिकन धर्म इंग्लैण्ड का वास्तविक धर्म है। चर्च पर से राजा के अधिकारों का अंत कर दिया गया। धर्म के मामलों में भी संसद का उत्तरादायित्व हो गया। इससे कालांतर में इंग्लैण्ड में धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण निर्मित हुआ। 7 संसद द्वारा गृह और विदेश-नीति का निर्धारण: अब तक राजा देश की गृह और विदेश नीतियों का स्वयं संचालन करता था। वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रेरित रहता था। देश के हितों की उपेक्षा की जाती थी। इससे अनेक बार राजा द्वारा अपनायी गयी विदेश नीति निष्फल ही रही। किन्तु क्रांति के बाद गृह और विदेश नीति

का निर्धारण संसद के परामर्श और स्वीकृति से किया जाने लगा। इससे इंग्लैण्ड की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई और उसके औपनिवेशक साम्राज्य का विस्तार हुआ। 8 यूरोप की राजनीति पर प्रभाव - इंग्लैण्ड की इस शानदार क्रांति का प्रभाव यूरोप के देशों पर पड़ा। अब तक यूरोप में निरंकुश स्वेच्छाचारी राजसत्ता ही आदर्श राजसत्ता मानी जाती थी। पर इस क्रांति के प्रभाव और परिणामस्वरूप यूरोप में भी वैज्ञानिक राजतंत्‌और लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली के लिए आंदोलन प्रारंभ हुए।

References: Internet & Competitive books.